Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

गुप्तकालीन मुद्राओं का ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ. सुमित मेहता *

* सहायक आचार्य, राजकीय कला महाविद्यालय, सीकर (राज.) भारत

प्रस्तावना – गुप्त साम्राज्य (319–550 ईस्वी) का उदय भारतीय इतिहास की वह धुरी है, जिसने प्राचीन भारत को 'स्वर्ण युग' की संज्ञा प्रदान की। मौर्यों के पतन के उपरांत भारत में व्याप्त राजनीतिक विखंडन को समाप्त कर गुप्त शासकों ने न केवल एक विशाल साम्राज्य की नींव रखी, बल्कि एक ऐसी सुदृढ आर्थिक व्यवस्था विकसित की, जिसका आधार उनकी अद्धितीय स्वर्ण मुद्राएं थीं। इन मुद्राओं को समकालीन अभिलेखों में 'दीनार' कहा गया है, जो कुषाणों के 'दिनारियस' शब्द का भारतीयकरण था।[1]

इस शोध–पत्र में डॉ. विमल चंद्र पाण्डेय, ए.एस. अल्तेकर, आर.सी. मजूमदार और पी.एल. गुप्त जैसे प्रमुख इतिहासकारों के मतों को समाहित कियागया है ताकि यह सिद्ध किया जा सके कि गुप्त सिक्के केवल धन नहीं, बल्कि तत्कालीन भारत का सांस्कृतिक और राजनीतिक घोषणापत्र थे।[2]

गुप्त मुद्राओं का उद्भव: कुषाण प्रभाव से मुक्ति और भारतीयकरण – गुप्त शासकों ने अपनी मुद्रा प्रणाली का आधार कुषाणों के सिक्कों को बनाया था, परंतु उनकी महानता इस बात में थी कि उन्होंने बहुत जल्दी विदेशी कला के सांचे को भारतीय स्वरूप प्रदान किया।[3]

प्रारंभिक चरण और कुषाण छाप – चंद्रगुप्त प्रथम के समय के सिक्कों पर कुषाण प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। राजा की वेशभूषा, जैसे कि लंबा कोट और पतलून, मध्य एशियाई प्रभाव को दर्शाती है। प्रारंभ में, सिक्कों के किनारे खुरदरे थे और उन पर अंकित देवी 'अर्दोक्षोय का अंकन मिलता था।[4]

समुद्रगुप्त और भारतीयकरण की पराकाष्ठा – समुद्रगुप्त के शासनकाल में सिक्कों का पूर्णत: भारतीयकरण हुआ। राजा को अब कुषाण कोट के स्थान पर भारतीय 'धोती' पहने हुए दिखाया जाने लगा। विदेशी वाद्य यंत्रों के स्थान पर भारतीय 'वीणा' का अंकन होने लगा। डॉ. ए.एस. अल्तेकर के अनुसार, 'गुप्त कलाकारों ने विदेशी ढांचे को त्याग कर उसमें भारतीय आत्मा का संचार किया।' देवी लक्ष्मी का कमल पर विराजमान होना इसी काल की विशिष्टता बनी।[5]

चंद्रगुप्त प्रथम: राजा–रानी प्रकार के सिक्के–आलोचनात्मक विश्लेषण चंद्रगुप्त प्रथम द्वारा जारी किए गए ये सिक्के गुप्त इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण और विवादित कड़ी हैं। इन सिक्कों का वजन मानक 118.5 ग्रेन से 121 ग्रेन के बीच रहता था।[6]

दृश्य संरचना और सूक्ष्म विवरण – इन सिक्कों के अग्र भाग पर राजा चंद्रगुप्त प्रथम और उनकी लिच्छवि राजकुमारी पत्नी कुमारदेवी का चित्र अंकित है। राजा रानी को एक उपहार (अंगूठी या कंगन) भेंट कर रहे हैं। रानी ने दाहिने हाथ में वस्त्र का छोर पकड़ा हुआ है और उनके चेहरे पर एक विशिष्ट मुस्कान और शालीनता है। राजा के पार्श्व में 'चन्द्र' या 'चन्द्रगुप्त' और रानी के पीछे 'कुमारदेवी' उत्कीर्ण है।

पृष्ठ भाग भाग पर सिंहवाहिनी देवी (दुर्गा) का अंकन है। देवी एक पैर को मोड़कर बैठी हैं और उनके हाथों में पाश (फंदा), जिसे शक्ति और न्याय का प्रतीक माना जाता है तथा कॉर्नुकोपिया (समृद्धि का प्रतीक धन का सींग) है। सबसे महत्वपूर्ण साक्ष्य पृष्ठ भाग पर अंकित 'लिच्छवय:' शब्द है। लेख के साथ–साथ देवी के पास कुछ विशेष चिन्ह बने हैं। देवी के सिर के पीछे एक प्रभामण्डल भी बना है जो उनकी दिव्यता को दर्शाता है।[7]

ऐतिहासिक विवाद

डॉ. विमल चंद्र पाण्डेय दृष्टिकोण: डॉ. पाण्डेय ने अपनी पुस्तक 'प्राचीन भारत का इतिहास' में इस बात पर बल दिया है कि चंद्रगुप्त प्रथम ने ये सिक्के अपनी निजी उपलब्धि के बजाय लिच्छवियों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए चलाए थे। वे तर्क देते हैं कि 'ये सिक्के इस बात के अकाट्य प्रमाण हैं कि गुप्तों ने लिच्छवियों के साथ न केवल विवाह किया, बल्कि उनके राज्य का अपने राज्य में विलय कर लिया।' उनके अनुसार, यह विवाह केवल एक सामाजिक संबंध नहीं था, बल्कि गुप्तों की सत्ता का 'संवैधानिक आधार' था।[8]

जॉन एलन का विचार: ब्रिटिश विद्वान एलन का मानना था कि ये सिक्के लिच्छवियों ने स्वयं जारी किए थे।[9]

आर.सी. मजूमदार का तर्क: मजूमदार जी का मानना है कि समुद्रगुप्त ने अपने माता–पिता के विवाह की स्मृति में ये 'स्मारक सिक्केय जारी किए थे। उनका तर्क है कि चूंकि चंद्रगुप्त प्रथम ने अन्य कोई सिक्का नहीं चलाया, इसलिए यह अकेला सिक्का समुद्रगुप्त की कृति होना चाहिए।[10]

समुद्रगुप्त: मुद्राओं के माध्यम से साम्राज्य का विज्ञापन– समुद्रगुप्त को 'सिक्कों का प्रेमी' और 'कविराज' कहा जाता है। उन्होंने 6 मुख्य प्रकार के स्वर्ण सिक्के चलाए, जो उनके बहुआयामीव्यक्तित्व को दर्शाते हैं:[11]

1. **गरूड़ प्रकार:** यह समुद्रगुप्त के सबसे लोकप्रिय सिक्के थे। सिक्के के अग्र भाग में राजा हाथ में गरूड़ ध्वज लिए खड़ा है। पृष्ठ भाग में सिंहासन पर बैठी हुई देवी लक्ष्मी और लेख 'पराक्रम:' अंकित है। यह सिक्का उनकी नाग वंश के राजाओं पर विजय का प्रतीक माना जाता है।
2. **धनुर्धारी प्रकार:** इस प्रकार के सिक्के गुप्त काल में बहुत प्रसिद्ध हुए। इसके अग्र भाग पर राजा के हाथ में धनुष और बाण है। पृष्ठ भाग पर देवी लक्ष्मी और लेख 'अप्रतिरथ' (जिसका कोई प्रतिद्वंदी ना हो) लिखा है।

3. **परशु प्रकार:** इन सिक्कों के अग्र भाग पर राजा के हाथ में एक परशु है। एक बौना व्यक्ति राजा की ओर देख रहा है। पृष्ठ भाग पर देवी और लेख 'कृतांतपरशु:' (यमराज के समान संहारक कुल्हाडी वाला) लिखा है।

4. **व्याघ्र निहनन प्रकार:** यह समुद्रगुप्त का सबसे प्रचलित सिक्का था। इसका वजन लगभग 118 ग्रेन था। यह उनकी बंगाल की विजय को दर्शाते हैं। सिक्के के अग्र भाग पर राजा को बाघ का शिकार करते हुए दिखायागया है। राजा ने धोती और पगड़ी पहनी है। पृष्ठ भाग पर देवी गंगा मकर पर खडी हैं और लेख 'व्याघ्र पराक्रम' अंकित है।

5. **अश्वमेध प्रकार:** इन सिक्कों का वजन 118.5 से 120 ग्रेन के बीच था। सिक्के के अग्र भाग पर यज्ञ के खंभे (यूप) से बँधा हुआ एक घोडादिखायागया है। पृष्ठ भाग पर मुख्य रानी (दत्तदेवी) हाथ में चंबर लिए खड़ी है और लेख 'अश्वमेध पराक्रम:' लिखा है।

6. **वीणावादन प्रकार:** इसमें अग्र भाग पर राजा को घुटनों तक ऊँची धोती पहने और ऊँचे कोच पर बैठकर अपनी गोद में वीणा रखकर बजाते हुए दिखाया गया है। पृष्ठ भाग पर देवी और लेख 'महाराजाधिराज श्री समुद्रगुप्त' लिखा है। डॉ. पी.एल. गुप्त के अनुसार, 'यह सिक्का सिद्ध करता है कि गुप्त काल में शस्त्र और शास्त्र का अद्भुत समन्वय था।' यह प्राचीन भारत के सबसे कलात्मक सिक्कों में से एक है।[12]

चंद्रगुप्त द्वितीय (विक्रमादित्य) की मुद्राऐं साम्राज्य की पराकाष्ठा– चन्द्रगुप्त द्वितीय (जिन्हें विक्रमादित्य के नाम से भी जाना जाता है) के शासनकाल की मुद्राएँ भारतीय इतिहास की सबसे कलात्मक और समृद्ध मुद्राओं में गिनी जाती हैं। उनके द्वारा जारी किए गए सोने के सिक्के (दीनार) उस युग की संपन्नता और उनकी व्यक्तिगत उपलब्धियों को दर्शाते हैं। चंद्रगुप्त द्वितीय ने शकोंको पराजित कर पहली बार रजत मुद्राएं जारी कीं।[13]

1. **धनुर्धारी प्रकार:** यह चन्द्रगुप्त द्वितीय के सबसे प्रसिद्ध और प्रचलित सिक्के थे। इसमें सिक्के के सामने वाले भाग पर राजा हाथ में धनुष और बाण लिए खड़े दिखाई देते हैं। पीछे की तरफ सिंहासन पर बैठी हुई देवी लक्ष्मी की आकृति और 'श्रीविक्रम:' की उपाधि अंकित होती है।

2. **अश्वारोही प्रकार:** राजा को सजे हुए घोडे पर सवार दिखायागयाहै। ये सिक्के राजा के साहस और घुडसवारी के कौशल को प्रदर्शित करते हैं।

3. **व्याघ्र–निहंता प्रकार:** इसमें राजा को एक जीवित बाघ का शिकार करते हुए दिखाया गया है। यह उनके द्वारा बंगाल (वंग) के क्षेत्रों की विजय का प्रतीक माना जाता है।

4. **छत्र प्रकार:** इसमें राजा वेदी में आहुति दे रहे हैं और उनके पीछे एक बौना सेवक शाही 'छत्र' (छाता) पकडे खड़ा है।

5. **पर्यंक प्रकार:** इसमें राजा को एक ऊंचे आसन या सोफे (Couch) पर आराम की मुद्रा में बैठे दिखायागया है। इनमें अक्सर 'रूपाकृति' शब्द का प्रयोग मिलता है।

6. **चक्रविक्रम प्रकार:** यह एकअत्यंत दुर्लभ मुद्रा है। इसमें भगवान विष्णु (चक्रपुरुष के रूप में) राजा को तीन गोल वस्तुएं भेंट करते हुए दिखाए गए हैं।[14]

कुमारगुप्त प्रथम की मुद्राऐं – कुमारगुप्त का शासनकाल गुप्त मुद्राओं के इतिहास में 'कलात्मकता का चरमोत्कर्ष' माना जाता है। उन्होंने सबसे अधिक प्रकार के सिक्के जारी किए:[15]

1. **कार्तिकेय (मयूर) प्रकार:** यह उनका सबसे विशिष्ट सिक्का है। इसमें राजा को मोर (मयूर) को फल खिलाते हुए दिखायागया है, और पीछे की तरफ मयूर पर सवार भगवान कार्तिकेय का चित्रण है।

2. **अश्वमेध प्रकार:** समुद्रगुप्त के बाद कुमारगुप्त ने भी अश्वमेध यज्ञकिया और 'अश्वमेध महेन्द्र' की उपाधि के साथ सिक्के जारी किए।

3. **खड्गधारी प्रकार:** इसमें राजा को तलवार धारण किए हुए दिखायागया है।

4. **गजारोही:** राजा को हाथी पर सवार होकर शत्रु का दमन करते हुए दिखायागया है।

5. **गेंडा–निहंता (Rhinoceros Slayer):** यह एक दुर्लभ सिक्का है जिसमें राजा को गेंडे का शिकार करते दिखायागया है।

6. **अप्रतिघ प्रकार:** इसमें राजा को बीच में दिखायागया है और उनके दाएं–बाएं दो अन्य व्यक्ति खड़े हैं।

स्कंदगुप्त की मुद्राऐं – स्कंदगुप्त के समय से गुप्त सिक्कों में गिरावट शुरूहुई।[16]

1. **भारी स्वर्ण सिक्के:** उन्होंने सिक्कों का वजन तो बढ़ाया (144 ग्रेन तक), लेकिन उनमें सोने की शुद्धता कम हो गई और मिलावट बढ़ गई।

2. **राजा–लक्ष्मी प्रकार:** इसमें राजा और देवी लक्ष्मी एक–दूसरे के सामने खड़े हैं। यह स्कंदगुप्त की विजय और राज्य की पुन: स्थापना का प्रतीक माना जाता है।

3. **धनुर्धारी प्रकार:** यह इनके समय का सबसे प्रचलित सिक्का था।

पुरुगुप्त और परवर्ती शासक – स्कंदगुप्त के बाद के राजाओं (जैसे बुधगुप्त, नरसिंहगुप्त, विष्णुगुप्त) के समय में मुद्राओं की स्थिति और बिगड़ गई। इन राजाओं ने केवल धनुर्धारी प्रकार के सिक्के ही जारी किए, विविधता पूरी तरह समाप्त हो गई।नरसिंहगुप्त और विष्णुगुप्त के सिक्कों में सोने की मात्रा बहुत कम हो गई थी, जो गुप्त साम्राज्य के पतन और आर्थिक कमजोरी को दर्शाता है।सिक्कों की फिनिशिंग और उन पर उकेरी गई कलाकृतियाँ भद्दी और स्पष्ट होने लगी थीं।

इन सभी सिक्कों पर ब्राह्मी लिपि और संस्कृत भाषा का प्रयोगकियागया है।उनके सिक्कों पर 'अप्रतिरथ', 'परमभागवत' और 'विक्रमादित्य' जैसी गौरवशाली उपाधियाँ मिलती हैं।[17]

मुद्राओं का प्रभाव: धर्म, राजनीति, समाज और संस्कृति

धार्मिक प्रभाव: गुप्त सिक्के ब्राह्मणीय धर्म के पुनरुत्थान के सबसे बडे साक्ष्य हैं। सिक्कों पर 'गरुड ध्वज' का अंकन, लक्ष्मी, कार्तिकेय और गंगा जैसे देवी–देवताओं का चित्रण यह दर्शाता है कि राज्य ने वैष्णव धर्म को संरक्षण दियाथा।[18]

राजनीतिक प्रभाव: सिक्के राजा की संप्रभुता के विज्ञापन का मुख्य साधन थे। सिक्कों पर अंकित उपाधियाँ जनता में राजा के प्रति अजेय होने का विश्वास पैदा करती थीं।

सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव: मुद्राएं तत्कालीन समाज का दर्पण हैं। रानी कुमारदेवी के सिक्कों पर उनके 'कर्णफूल' और 'मुक्ताहार' उस काल के उन्नत आभूषण शिल्प को दर्शाते हैं। वीणावादनसिक्के यह बताते हैं कि संगीत और कला को सामाजिक रूप से उच्च दर्जा प्राप्त था।

तकनीकी विश्लेषण:

टंकण प्रक्रिया और धातु शुद्धता – गुप्तकालीन मुद्राओं का वैज्ञानिक विश्लेषण साम्राज्य के उत्थान और पतन की पूरी कहानी बयां करता है।

धातु की शुद्धता का ह्रास – इतिहासकार एस.आर. गोयल और डॉ. विमल चंद्र पाण्डेय ने सिक्कों की रासायनिक जांच के आधार पर निष्कर्ष दिए हैं:[19]

1. समुद्रगुप्त: सोने की शुद्धता 90% से 98% के बीच थी।

2. स्कंदगुप्त:हूणों के आक्रमण के कारण शुद्धता में भारी गिरावट आई और सोना मात्र 70% रहगया।
3. परवर्ती गुप्त: विष्णुगुप्त के समय तक सोना गिरकर 43% तक पहुँच गया।

टंकण विधि (Minting Process) – गुप्त सिक्के 'डाई-स्ट्रक' (Die & Struck) पद्धति से बनते थे। इसमें धातु को शुद्ध कर निश्चित वजन के टुकडों में काटा जाता था और फिर दो डाई के बीच रखकर हथौडे से प्रहार किया जाता था।[20]

बयानाढेर: मुद्राशास्त्र का महाकुंभ– 1946 में राजस्थान के भरतपुर जिले के बयाना में 1821 स्वर्ण सिक्कों का भंडार मिला। इस भंडार ने गुप्त वंशावली के कई अज्ञात शासकों और सिक्कों के नए प्रकारों का पता लगाया।[21]

खोज का इतिहास और परिस्थितियाँ – 1946 में भरतपुर रियासत के तत्कालीन महाराजा ब्रजेंद्र सिंह शिकार पर गए थे, जहाँ उनके दल को अचानक जमीन के नीचे दबे हुए मिट्टी के बर्तनों में ये सिक्के मिले। प्रसिद्ध मुद्राशास्त्री ए. एस. अल्तेकर ने इन सिक्कों का विस्तृत अध्ययन किया और 'The Bayana Hoard of Gupta Gold Coins' नामक पुस्तक लिखी।[22]

बयानाढेर का ऐतिहासिक महत्व – अज्ञात शासकों का पता चलना: इस भंडार से 'काच' (Kacha) नामक शासक के सिक्के मिले।

1. कलात्मक विविधता: यहाँ से ऐसे सिक्के मिले जो पहले कभी नहीं देखे गए थे, जैसे 'चक्र-विक्रम' प्रकार।
2. आर्थिक समृद्धि का प्रमाण: इतनी बडी संख्या में स्वर्ण मुद्राओं का मिलना दर्शाता है कि गुप्त काल में आम नागरिक भी स्वर्ण संचय करने की स्थिति में थे।

निष्कर्ष – गुप्तकालीन मुद्राशास्त्र भारतीय गौरव का प्रतीक है। 'राजा-रानी' प्रकार के सिक्कों से लेकर समुद्रगुप्त की वीणा और स्कंदगुप्त की मिलावटी मुद्राओं तक, ये सिक्के भारत के एक महान राजवंश के उत्थान और पतन की पूरी गाथा कहते हैं। निष्कर्षत: ये सिक्के वह प्रमाण हैं जो यह सिद्ध करते हैं कि गुप्त काल वाकई भारत का 'स्वर्ण युग' था। डॉ. विमल चंद्र पाण्डेय के शब्दों में, 'सिक्कों का यह सफर भारतीयता के उत्कर्ष और सामंतवाद के उदय के बीच की एक सेतु है।'

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. अल्तेकर, ए.एस. (1954)- The Coinage of the Gupta Empire-काशी हिंदू विश्वविद्यालय।
2. गुप्त, पी.एल. (1974)-Coins: India's Past in Metals-नेशनल बुक ट्रस्ट।
3. कनिंघम, एलेक्जेंडर (1894)- Coins of Ancient India- लंदन।
4. एलन, जॉन (1914)- Catalogue of the Coins of the Gupta Dynasties in the British Museum-लंदन।
5. सिंह, उपिंदर (2008)- A History of Ancient and Early Medieval India-पियर्सन एजुकेशन।
6. स्मिथ, वी.ए. (1906)- Catalogue of Coins in the Indian Museum- कोलकाता।
7. फ्लीट, जे.एफ. (1888)- Corpus Inscriptionum Indicarum, Vol 3-कलकत्ता।
8. पाण्डेय, वी.सी. (2018). प्राचीन भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, खंड- 1सेंट्रल पब्लिशिंग हाउस।
9. एलन, जॉन (उपरोक्त स्रोत का विशेष संदर्भ - लिच्छवि मुद्रा विश्लेषण)।
10. मजूमदार, आर.सी. (1981)- The Classical Age- भारतीय विद्या भवन।
11. राय, उदय नारायण (1965). गुप्त सम्राट और उनका काल. लोकभारती प्रकाशन।
12. गुप्त, पी.एल. (उपरोक्त स्रोत -वीणावादन मुद्रा विश्लेषण)।
13. राय, एस.सी. (1959)-Stratigraphic Evidence of Coins in Indian EÛcavations-वाराणसी।
14. अल्तेकर, ए.एस. (उपरोक्त स्रोत - चक्रविक्रम मुद्रा विश्लेषण)।
15. मजमुदार, आर.सी. एवं अल्तेकर, ए.एस. (1946)- The Vakataka & Gupta Asesh- मोतीलाल बनारसीदास।
16. शर्मा, आर.एस. (2005)- Indian Feudalism- मैकमिलन इंडिया।
17. ठाकुर,उपेन्द्र (1967)- The Hunas in India- चोखम्बा संस्कृत सीरीज।
18. गोयल, एस.आर. (1967)- A History of the Imperial Guptas-सेंट्रल बुक डिपो।
19. पाण्डेय, वी.सी. (उपरोक्त स्रोत - धातु शुद्धता विश्लेषण)।
20. साहनी, बी. (1945)- The Technique of Casting Coins in Ancient India-बम्बई।
21. अल्तेकर, ए.एस. (1948)- Catalogue of the Gupta Gold Coins in the Bayana Hoard-बम्बई।
22. महाराजा ब्रजेंद्र सिंह एवं पुरातात्विक रिपोर्ट (1946-47). भरतपुर राज्य अभिलेखागार।

****